Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ संतोषी माता पूजी विधि ॥

॥ जय संतोषी माता ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ शुक्रवार की पूजा की तैयारी ॥

संतोषी माता का व्रत शुक्रवार को रखा जाता है। सुबह स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहनें और साफ स्थान पर चौकी रखें। लाल या स्वच्छ कपड़ा बिछाकर माता का चित्र अथवा प्रतिमा स्थापित करें। दिनभर की रीति अपने घर की परंपरा और स्वास्थ्य के अनुसार तय करें।

सामान्य पूजा सामग्री

माता का चित्र, चौकी, कपड़ा, जल से भरा कलश या पात्र, फूल, रोली या चंदन, धूप, दीप, गुड़ और भुने चने रखें। आरती के लिए दीपक तथा प्रसाद बाँटने के लिए साफ कटोरी रखें। अधिक सामग्री जुटाना आवश्यक नहीं है।

संकल्प और स्थापना

हाथ में जल या फूल लेकर माता के सामने संतोष, सद्बुद्धि और परिवार के मंगल के लिए संकल्प लें। यदि लगातार शुक्रवारों का व्रत लेना हो, तो संख्या पहले से अपनी क्षमता तथा परिवार की रीति के अनुसार तय करें; सोलह शुक्रवार बहुत प्रचलित हैं।

कलश या जलपात्र माता के सामने रखें और पास में गुड़-चना का भोग सजाएँ। दीप जलाते समय उसे सुरक्षित स्थान पर रखें।

॥ पूजन, कथा और आरती का क्रम ॥

१. माता का पूजन

माता को प्रणाम कर फूल, रोली या चंदन अर्पित करें। धूप-दीप दिखाएँ और गुड़-चना का नैवेद्य रखें। मन में संतोष और कृतज्ञता का भाव रखते हुए सरल शब्दों में प्रार्थना करें।

२. कथा-पाठ और आरती

संतोषी माता की व्रत कथा पढ़ें या सुनें। कई घरों में कथा सुनते समय हाथ में थोड़ा गुड़-चना रखा जाता है। कथा के बाद माता की आरती करें और परिवार तथा उपस्थित लोगों में प्रसाद बाँटें।

३. जल और प्रसाद

कलश का थोड़ा जल पूजा स्थान पर छिड़क सकते हैं; शेष स्वच्छ जल पौधे में दें। गुड़-चना सम्मानपूर्वक प्रसाद के रूप में ग्रहण करें। भोजन और पारण के समय घर की रीति तथा अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

व्रत की प्रचलित रीति में शुक्रवार को खटाई से परहेज़ किया जाता है। फलाहार या एक समय बिना खटाई का भोजन अलग घरों में चलता है; निर्जल रहना अनिवार्य नहीं।

॥ जय संतोषी माता ॥